'अपमान' – महान बनने का साधन

• ब्रह्माकुमार विनायक, आबू पर्वत

जैसे मानव मौत से डरता है, उसको रोकने के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहता है वैसे ही एक और भय से भी भयभीत रहता है और उससे बचने का प्रयास करता रहता है, वह है अपमान का भय।

मानव, जीवन के कष्टों और परिस्थितियों को सहन करेगा, सामना करेगा लेकिन एक क्षण के अपमान को... कभी भी नहीं। दुलहन चाहती है कि ससुराल में कभी उसका अपमान न हो। बच्चे चाहते हैं कि माँ-बाप उनका अपमान न करें और वही माँ-बाप जब वृद्ध होकर बच्चों की शरण में जाते हैं तो यही आश रखते हैं कि बच्चे कभी भी उनका अपमान न करें। एक नौकर भी चाहता है कि मालिक से अपमान न हो। सार में यही कह सकते हैं, जन्म से लेकर अंतिम श्वास तक मानव मान-शान और प्यार की चाहना रखता है, न कि अपमान की।

जब संबंधों में, मित्र वर्ग में, कार्य व्यवहार में हमारा विरोध-अपमान करने वाला कोई नहीं हो तो हम समझते हैं कि हमारे जैसा खुशनसीब और कौन हो सकता है! जीवन सार्थक, धन्य हो गया।

क्या सचमुच हमारा ऐसा सोचना ठीक है? क्या अपमान इतनी भयानक वस्तु है जो बिल्कुल सहन नहीं की जा सकती? अगर हमारा कोई अपमान नहीं करे, हमें नफ़रत की नज़र से नहीं देखे, हमारे साथ वैर-विरोध नहीं रखे और हरेक व्यक्ति से हमें प्यार ही प्यार मिले तो क्या यह जीवन की सच्ची सार्थकता है?

हम तो खुशी से कह देते हैं, जी हाँ लेकिन इतिहास कहता है, नहीं। इतिहास-सिद्ध है कि महान व्यक्तियों को जन्म देने में, उनके अंदर छिपी गुप्त शक्तियों, गुणों और कलाओं को प्रत्यक्ष करने में जितना 'अपमान' ने बेहतर पात्र निभाया उतना 'प्यार' ने नहीं। इतिहास की इस आश्चर्यजनक बात को हम उदाहरण द्वारा समझेंगे।

अपमान से इतिहास-पुरुष का जन्म

एक भारतीय युवक, दक्षिण अफ्रीका में, रेल में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में सफर कर रहा था। एक सहयात्री को यह सहन नहीं हुआ क्योंकि युवक 'रंगवाला' था। उसने अधिकारियों को बुलाया और एक अधिकारी ने युवक को वैन के डिब्बे में जाकर बैठने का आदेश दिया। लेकिन युवक ने इंकार किया क्योंकि उसके पास प्रथम श्रेणी में आरक्षित किया हुआ टिकट था, उसको वहाँ बैठने का पूर्ण अधिकार था। फिर भी अधिकारी ने पुलिस की मदद से धक्का देकर युवक को ज़बरदस्ती नीचे उतार दिया और सारा सामान नीचे फेंक दिया। अधिकारियों ने एक हैंडबैग के अलावा उसका सारा सामान भी ले लिया। पहाड़ी इलाका होने के कारण, अपमान के साथ-साथ उस यात्री को रात कड़ी ठंडी में गुज़ारनी पड़ी।

सौ साल पहले 'रंग भेद' के नाम पर जो अत्याचार हो रहा था, उनमें से एक अत्यंत दुखद घटना यह थी। वह युवक था मोहनदास करमचंद गांधी। लेकिन एक बहुत ही आश्चर्य की बात यह थी कि इस खंडनीय घटना के पीछे छिपे हुए राज़ को न वह अपमानित युवक जानता था और न ही जिसने अपमान किया वह जानता था। जैसे तीव्र प्रसव वेदना को सहन करने के बाद ही कुलदीपक का जन्म होता है वैसे ही इस तीव्र अपमान को सहन करके ही एक इतिहास पुरुष का जन्म हुआ। जर्जरित होकर बैठे हुए युवक के मन में बिजली चमकी। उसी क्षण उसने ठान लिया कि इस रंग भेद के अभिशाप से मानव कुल को मुक्त करना ही है और इस महान कार्य के लिए स्वयं को समर्पण करना है। वह एक ऐसी सुहावनी घड़ी थी जब मोहनदास के मन में महात्मा गांधी जी का जन्म हुआ, जिन्होंने पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा और प्रेम का अमूल्य योगदान दिया।